नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

भाषाओं को मिली वैश्विक पहचान –प्रो. गिरीश्वर मिश्र

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

विशाखपट्टनम में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्धा, 13 दिसंबर 2016: विदेशी मंत्रालय, भारत सरकार, यू.जी.सी तथा संत जोसफ महिला महाविद्यालय, विशाखपट्टनम के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव विषय पर 9-10 दिसंबर 2016 को अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने बीज व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि वैश्विक परिदृश्य ने हमारे जन

जीवन को और हमारी भाषाओं और साहित्य को भी इतना व्यापक फ़लक प्रदान किया कि हमारी भाषाएँ इसी राष्ट्र की परिधि तक सीमित न रहकर वैश्विक हो गयीं। हमारी भाषाओं को वैश्विक पहचान मिल गयी है। विदेशी भूमि पर निवासरत हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा भाषियों और लेखकों ने वर्तमान युग में अभारतीय एवं भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों का अंकन कर महत्वपूर्ण सृजनकार्य किया है। उन्होंने कहा कि हिन्दी की वैश्विक छवि निर्मित करने में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान विशेष रहा है। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में भूमंडलीकरण के नेपथ्य में सृजित साहित्य ने भारतीय भाषाओं के क्षेत्र को व्यापकता प्रदान की। इन रचनाकारों ने कई पद्य और गद्य रचनाओं में मानवातावादी मूल्यों को आधार मानकर जिस संस्कृति की पुष्टि की है उसमें वैश्विक संस्कृति प्रतिफलित होती है।

विशिष्ट अतिथि हांबार्ग विश्वविद्यालय की प्रो. तातियाना ओरानस्कइया ने अपने वक्तव्य में वैश्वीकरण का पर कहा कि लोग अपना देश छोड़कर विश्व में फैल जाते हैं और उनके साथ उनकी भाषाएँ भी| विश्व भर में आधुनिक भारतीय भाषाओं का फैलता हुआ प्रभाव आनंददायी है| परन्तु भारतीय भाषाओं पर अंग्रेजी का बढ़ता हुआ दबाव भी वैश्वीकरण का एक अंग है, और वह भारत के लिए हानिकारक है| अपने देश में अपनी भाषाओं का उचित स्थान होना चाहिए| इनको रोजगारपरक भी होना चाहिए|

संगोष्ठी संयोजिका संत जोसफ महिला महाविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्ष डा.पी.के.जयलक्ष्मी ने संगोष्ठी के औचित्य पर प्रकाश डाला।

हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की वैश्विक परिधि पर आयोजित सत्र में आंध्र विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य पी. अदेश्वरराव ने कहा कि वैश्विक परिदृश्य में बदलाव के अनुरूप विभिन्न देशों की संस्कृति, साहित्य और लोगों की सोच में परिवर्तन आना सहज एवं स्वाभाविक है। वैज्ञानिक आविष्कारों, सूचना, बाजार एवं मिडिया के दौर में भाग लेनेवाले विविध देशों के नागरिकों की चिंतन पद्धति पर वैश्वीकरण के व्यापक प्रभाव को देखा जा सकता है। वैश्विक संदर्भ में भारतीय भाषाएँ एवं विज्ञापन की प्रासंगिकता पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की अनुवाद अध्ययन विभाग की अध्यक्षा डा. सी. अन्नपूर्णा ने सूचना एवं प्रौद्योगिकी पर वैश्वीकरण के प्रभाव को समझाया। उन्होंने कहा कि सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवीनतम उपलब्धियों तथा आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर भाषाओं के तकनीकी स्वरूप को विकसित करने की अनिवार्यता को हम महसूस करने लगे हैं। विश्व बाजार की मांग के अनुरूप हार्दिक और स्नेहपूर्ण संबंधों को मजबूत बनाने के कार्य में भाषाओं की निर्णायिक भूमिका सिद्ध होने लगी है। विज्ञापन की दुनिया की अपेक्षाओं को दृष्टि में रखकर भाषाओं को सशक्त बनाना आवश्यक सिद्ध हुआ। सूचना प्रौद्योगिकी एवं भूमंडलीकरण पर आयोजित सत्र में प्रो. आर.एस. सर्राजु, हिंदी विभागाध्यक्ष, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने अपने भाषण में वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी के आधार पर ज्ञानाश्रित समाजों के बनने की प्रकिया है। यह सूचना प्रौद्योगिकी एक ऐसी शक्तिशाली प्रणाली और अप्रतिरोध तत्व है जिसकी सहायता के बिना आज विश्व के मनुष्य की प्रगति संभव नहीं है। इस शक्तिशाली सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव भारत की भाषाओं पर पड़ रहा है। ज्ञानाधारित समाजों में भाषाएँ मात्र मनुष्यों के बीच संपर्क के साधन ही नहीं बल्कि यंत्र और मनुष्यों के बीच संपर्क का भी साधन बन जाती हैं। कृत्रिम बुद्धि और मनुष्य की बुद्धि की होड़ में भाषाओं का स्वरूप बदलता जा रहा है। भारतीय भाषाओं में कार्यालयीन कार्य और अनुवाद पर डा. एस. कृष्ण बाबु ने कहा कि कार्यालयीन कार्य में प्रयोग हेतु भाषाओं को प्रशासानिक दृष्टि से दृढ़ बनाने की मांग के अनुरूप भाषाएँ विकासित होने लगी। साहित्यकार और पत्रकार विश्व संस्कृति की विशिष्टता को दर्शाने का प्रयास करने लगे। इक्कीस वीं सदी में भारतीय भाषा – साहित्यों का भविष्य विषय पर तिरुवारूर केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष आचार्य एस. वी.एस. एस. नारायण राजु ने कहा कि पश्चिमी देशों ने भूमंडलीकरण की आड़ में विश्व को एक नई दुनिया का स्वप्न दिखाया जा रहा है। भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, ग्लोबलविलेज आदि शब्दों की अवधारणाओं से भारतीय समाज और उसकी आंतरिक चेतना इन दिनों स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। इस चेतना का प्रभाव विभिन्न भारतीय भाषा-साहित्यों पर परिलक्षित हो रहा है। वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण लेखन व प्रकाशन के क्षेत्र में क्रांति आयी है।

सम्मेलन के दौरान संगोष्ठी विशेषांक विश्व मैत्री का लोकार्पण कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र द्वारा किया गया। संगोष्ठी में हिंदी तेलुगु, संस्कृत, तमिल, कन्नड, मलयालम तथा अंग्रेजी के 200 से ज्यादा प्रपत्र प्रस्तुत किए गए। महाविद्यालय की प्राचार्या डा. शैजी की अध्यक्षता में संगोष्ठी का समापन किया गया। सह संयोजक डा.एस.कृष्णबाबू ने संगोष्ठी की रपट प्रस्तुत की। डा. एस. दीप्ति ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।